स्वच्छ विकास एवं जलवायु पर एशिया-प्रशांत साझेदारी

स्वच्छ विकास एवं जलवायु पर एशिया-प्रशांत साझेदारी

द्वितीय मंत्रिस्तरीय बैठक

नई दिल्ली, भारत 15 अक्टूबर 2007

विज्ञप्ति

हमने 15 अक्टूबर 2007 को नई दिल्ली में स्वच्छ विकास एवं जलवायु पर एशिया- प्रशांत साझेदारी की अपनी दूसरी मंत्रिस्तरीय बैठक की।

हमने इस साझेदारी की शुरुआत 11-12 जनवरी 2006 को सिडनी, औस्ट्रेलिया में की थी। हालांकि जलवायु परिवर्तन, स्वच्छ विकास, और ऊर्जा सुरक्षा की जो चुनौतियां हमारे सामने हैं वे काफ़ी बड़ी हैं, किन्तु हमने व्यावहारिक समाधानो पर ध्यान केन्द्रित करते हुए नई पहल करने वाली ऐसी साझेदारी का गठन किया है, जिसने थोड़े ही समय में काफ़ी कुछ हासिल कर लिया है। सिडनी बैठक के बाद से, हमने ब्यौरेवार कार्य-योजनाएं तैयार की हैं, और 110 ऐसी परियोजनाओं का अनुमोदन किया है जो सम्पूर्ण साझेदारी के आर-पार सहभागिता पर आधारित है। हमारा विश्वास है कि हमने पारस्परिक सम्मान और सहयोग पर आधारित समान लोगों की सच्ची साझेदारी का निर्माण किया है। हममें से हरेक ने अपने इस साझे प्रयास के लिए सक्रिय योगदान किया है।

हमें यह ऐलान करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि कैनाडा भी साझेदारी के सातवें सदस्य के रूप में हमसे जुड़ गया है। कैनाडा, क्षेत्र में एक प्रमुख शक्ति है, साझेदारी के लक्ष्यों और स्वप्नो में भागीदार है, और उसने द्विपक्षीय और बहु पक्षीय उन व्यवस्थाओं के ज़रिए सभी साझेदारों के साथ सकारात्मक रूप से कार्य किया है जो हमारे काम का आधार हैं। हम आशा करते हैं कि जबकि हम अपने काम के अगले चरण की ओर बढ़ रहे हैं, कैनाडा की सहभागिता इस साझेदारी को और सशक्त बनाएगी। साझेदारी के प्रति कैनाडा का समर्थन अब तक हुई प्रगति के अनुमोदन का ही नहीं, बल्कि भविष्य के स्वप्नों और सम्भावनाओं का भी प्रतिनिधित्व करता है।

हमने अब तक जो प्रगति की है वह कई तत्वों का परिणाम है। हमारी सरकारों के भीतर विभिन्न मंत्रालयों के आपसी सहयोग ने हमारे प्रयासों का सम्वर्धन किया है और इससे साझेदारी के तहत अर्थपूर्ण सहकारिता सामने आई है। इसके अतिरिक्त, सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच सहभागिता

की प्रकृति और आकार हमारी सफलता के लिए एक बुनियादी तत्व है । साझा देशों के सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों ने इन प्रयासों के लिए उल्लेखनीय विशेषज्ञता और संसाधन उपलब्ध कराए हैं। इन तत्वों के सम्मिश्रण ने प्रभावकारी परिणाम प्राप्त करने में हमारी सहायता की है। हमारे कार्य से ऊर्जा कुशलता सुधरेगी, सर्वोत्तम विधियों के इस्तेमाल को बल मिलेगा, और प्राथमिकता वाले आठ क्षेत्रों में नए न्यून-उत्सर्जन वाले समाधानों का विकास होगा। इन आठ क्षेत्रों में स्वच्छतर जीवाश्म ऊर्जा, एल्यूमिनियम, कोयला खनन, इस्पात, नवीकरणीय ऊर्जा और वितरित उत्पादन, बिजली उत्पादन एवं प्रेषण, भवन और उपकरण, तथा सीमेन्ट शामिल हैं।

साझेदारी की परियोजनाओं के आरम्भिक पोर्टफ़ोलियो में मुख्य ध्यान उन गतिविधियों पर दिया गया है जो हमारे आगे आने वाले प्रयासों के लिए आधार प्रस्तुत करें, जैसेकि क्षेत्रक मूल्यांकन, क्षमता निर्माण, सर्वोत्तम विधियों की पहचान और टैक्नोलोजी अनुसन्धान तथा प्रदर्शन। हमें यह घोषणा करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि अनुमोदित गतिविधियों के इस ग्रुप में से हमने ऐसी 18 ध्वजपोत परियोजनाओं को मान्यता दी है जो साझेदारों द्वारा हाथ में ली जा रही विभिन्न प्रकार की सहकारी गतिविधियों का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। ये ध्वजपोत परियोजनाएं उस सहयोग के आकार और सम्भावनाओं का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं जिसका बीड़ा साझेदारी ने उठाया है। अपेक्षा है कि ये परियोजनाएं हमारी साझेदारी की परिवर्तनकारी प्रभावकारिता प्रदर्शित करेंगी जो भाग लेने वाली सरकारों के दृढ़-निश्चय, हमारे व्यापार प्रतिष्ठानों की उद्यमशीलता, और हमारे अनुसंधानकर्ताओं की निपुणता को ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन की समस्या से निपटने और साथ ही ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विकास बढ़ाने के लिए एक जुट करती हैं।

साझेदारी में शामिल हमारी सरकारों के साथ साथ उद्योग ने, जिसमें निजी क्षेत्र भी शामिल हैं, जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है वह हमारी उपलब्धियों में योगदान करने वाला एक मूल तत्व रहा है। उनका उत्साह और लगन हमारे कार्य का एक अनिवार्य तत्व बना रहेगा। हमें प्रसन्नता है कि भारतीय उद्योग और वाणिज्य मंडल संघ तथा भारतीय उद्योग परिसंघ हमारे औद्योगिक साझेदारों के लिए एक ऐसी संध्या का आयोजन कर रहे हैं जिसमें आपसी आदान-प्रदान का तो अवसर मिलेगा ही, साथ ही अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेन्सी और एशिया विकास बैंक के अध्यक्ष उन्हें सम्बोधित भी करेंगे। हमें विश्वास है कि इससे सभी आठ क्षेत्रों में उद्योग प्रतिष्ठानों के साथ हमारा सहयोग-सम्पर्क और सघन होगा।

इसके अतिरिक्त हम बड़ी प्रसन्नता के साथ “एशिया-प्रशान्त ऊर्जा टैक्नोलोजी सहकार केन्द्र” के कार्यान्वयन चरण के प्रारम्भ का ऐलान कर रहे हैं, जिस पर आरम्भिक रूप में विचार सिडनी की बैठक में किया गया था। अपेक्षा है कि यह केन्द्र आदान-प्रदान को बढ़ावा देकर, ऊर्जा कुशलता सम्बन्धी जानकारी का प्रसार करके, साझा देशों की सरकारों और उद्योगों में व्यापक तौर पर जो सर्वोत्तम विधि-व्यवस्थाएं मौजूद हैं, उन्हें सामने लाकर, साझेदारों को लाभ पहुंचाएगा। यह काम कार्यशालाओं का आयोजन करके, प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देने के कार्यक्रम चला कर और सूचनाओं का आंकड़ा-संग्रह तैयार करके किया जाएगा।

हमने वर्तमान पहलों के ज़रिए द्विपक्षीय और बहु पक्षीय सहोग जारी रखा है और उन व्यवस्थाओं के माध्यम से अपने सहकार को और मज़बूत बनाया है। हमारी गतिविधियां वातावरण परिवर्तन के बारे

में संयुक्त राष्ट्रसंघ के ढांचा समझौते के सिद्धान्तों तथा अन्य सम्बद्ध अन्तर्राष्ट्रीय दस्तावेज़ों के अनुरूप बनी हुई हैं और क्योटो सन्धि की पूरक हैं। कुछ अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों ने साझेदारी के साथ सहकार विकसित करने में जो रुचि दर्शाई है, हम उसके लिए आभारी हैं, और भविष्य में इन संगठनों के साथ सम्बन्ध विकसित करने अथवा बढ़ाने की सम्भावनाओं का अध्ययन करेंगे।

यद्यपि हमने सशक्त परिणाम पहले ही प्राप्त कर लिए हैं, किन्तु हम इस साझेदारी के ज़रिए अपने सहयोग को और मज़बूत बनाने के लिए दृढ़-संकल्प हैं, और हम ऐसा अवश्य करेंगे। अपने कार्य के अगले चरण में, हम टैक्नोलोजी सहयोग तथा हस्तान्तरण में अपने प्रयासों को और सशक्त एवं सघन बनाना जारी रखेंगे। हम अपनी सहकारी परियोजनाओं के लिए अतिरिक्त वित्तीय संसाधनों की खोज के अपने प्रयास भी जारी रखेंगे । हम नीति एवं कार्यान्वयन समिति से अपने प्रयास जारी रखने का आग्रह करते हैं, ताकि इस साझेदारी की और सफलता सुनिश्चित हो सके।

हम यह बैठक आयोजित करने के लिए भारत सरकार का धन्यवाद करते हैं और 2009 में फिर बैठक करने का निर्णय करते हैं।